

समय रेखा और इतिहास की समझ

हिमांशु खोले

शिक्षा का एक जाना-माना शिक्षण सूत्र है—ज्ञात से अज्ञात की ओर। इस सूत्र का बुनियादी विचार है—विद्यार्थी जो जानते हैं, जो उनके जीवन अनुभव हैं, उनसे कक्षा के ज्ञान को जोड़ा जाए। इस विचार को अमल में लाते हुए शिक्षक आसान और रोचक तरीके से इतिहास की एक महत्वपूर्ण अवधारणा और इससे जुड़ी समझ पर कार्य करते हैं। इससे पता ही नहीं चलता कि विद्यार्थी अपने और अपने गाँव के जीवन की घटनाओं की समय रेखा पर कार्य करते-करते कब हज़ारों साल पुरानी घटनाओं को समय रेखा पर उकेरने की पुख्ता समझ बना लेते हैं।

इतिहास को समझने में काल (Era) और तिथियों की समझ होने से बहुत मदद मिलती है। इतिहास पढ़ने-पढ़ाने का साध्य है—ऐतिहासिक घटनाओं के कारणों और प्रभावों को जोड़कर समझना, उनमें अन्तर और तुलना करना, तथा तार्किक चिन्तन और विश्लेषण करना। समय रेखा की समझ इन सभी को बेहतर समझने में मददगार होती है। लेकिन समय रेखा पर काम करने वाले शिक्षकों के लिए यह समझना भी ज़रूरी है कि यह इतिहास की समझ को विकसित करने का एक साधन मात्र है। सिर्फ़ इसे पढ़ पाना और बना पाना इतिहास की जटिल व व्यापक समझ नहीं है। यह उस समझ का एक छोटा-सा हिस्सा मात्र है।

“

संक्षेप तौर पर और सरल भाषा में कहा जाए तो इतिहास को समझने से आशय है समय के क्रम के साथ हुए बदलावों को, उनके कारणों और प्रभावों के साथ समझना।

”

पृष्ठभूमि

आमतौर पर अभी भी इतिहास विषय में तिथियों और काल (Era) का बहुत महत्व माना जाता है। परीक्षाओं में इनसे सम्बन्धित बहुत सारे सवाल पूछे जाते हैं। यही वजह है कि पाठ्यपुस्तकों, गाइडों और कुंजियों को भी इसी तरह से लिखा जाता रहा है। इससे पाठकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों में भी यह ग़लत मान्यता बन जाती है कि ऐतिहासिक व्यक्तियों या घटनाओं से जुड़ी तिथियों या कालों को याद करना, और क्रम से या बिना क्रम के सटीक बता पाना ही इतिहास बोध है, जबकि इतिहास बोध इससे कहीं अधिक व्यापक है।

हालाँकि, यह कहा जा सकता है कि तिथियों और काल (Era) की सटीक समझ होने से इतिहास बोध को विकसित करने में बहुत मदद मिलती है। यह समझ ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम को समझने, कालों के अनुसार घटनाओं में अन्तर करने व उनमें सम्बन्ध बनाने तथा समाजों के विकास क्रम की तुलना करने, तर्क करने और विश्लेषण करने में मददगार होती है। संक्षेप में और सरल भाषा में कहा जाए तो इतिहास को समझने से आशय है समय के क्रम के साथ हुए बदलावों को, उनके कारणों और प्रभावों के साथ समझना। समय रेखा या काल रेखा इनको एक कहानी की तरह क्रम से समझने में मदद करती है। ऐतिहासिक घटनाओं के बीच एक बार क्रमिक समझ बनने के बाद इसकी मदद से घटनाओं के कारणों और प्रभावों का विश्लेषण करना आसान हो जाता है। समय रेखा के इस्तेमाल को शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए आसान और रोचक कैसे बनाया जा सकता है, इसका अनुभव मुझे मध्य प्रदेश के सागर ज़िले के खुरई ब्लॉक की एकीकृत माध्यमिक शाला बांगची के कक्षा 6 से 8 के

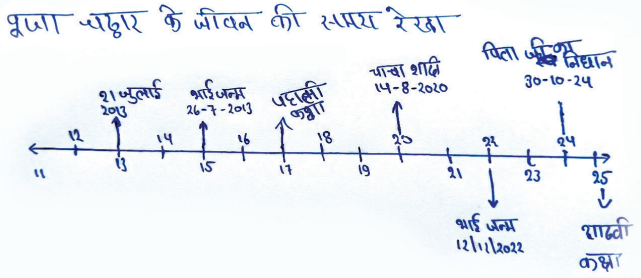


चित्र 1: बीते हुए समय को समय रेखा की मदद से महसूस करना

विद्यार्थियों के साथ इस पर काम करके मिला। इस लेख में मुख्य रूप से कक्षा 7 व 8 के साथ किए गए काम के अनुभव प्रस्तुत हैं।

अपने जीवन की समय रेखा से शुरुआत

जुलाई-2025 में सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों की एक कार्यशाला के दौरान बांगची शाला के सामाजिक विज्ञान के शिक्षक ने मुझसे उनके साथ मिलकर समय रेखा पर काम करने की बात की। यह काम कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के साथ करना था। मैंने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। हम दोनों ने मिलकर टीएलएम (टीचिंग-लर्निंग मटेरियल) पर तैयारी की, और तब विद्यार्थियों के साथ काम किया।



चित्र 2: अपने खुद के अनुभव को स्केल पर दर्ज करना

सबसे पहली गतिविधि कक्षा 6, 7 और 8 के विद्यार्थियों के साथ की गई। ये सभी विद्यार्थी एक साथ बैठे थे। बातचीत की शुरुआत में हमने विद्यार्थियों से पूछा, "अभी कौन-सा साल चल रहा है?" विद्यार्थियों का जवाब था, "2025।" तब मैंने एक-एक कर सभी विद्यार्थियों से पूछा कि आप किस साल पैदा हुए थे। सभी ने अपने-अपने जन्म के साल बताए। ज्यादातर विद्यार्थियों का जन्म सन् 2010 के बाद का था। मैंने बोर्ड पर सन् 2010 से 2030 तक की एक समय रेखा बनाई। फिर समय रेखा पर एक विद्यार्थी के जन्म का साल, उसके कक्षा पहली और पाँचवीं में आने का साल, और इस बीच उसके परिवार व समुदाय में जो महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं, उनको लिखा। अन्त में, सबसे ऊपर उस विद्यार्थी के नाम की समय रेखा लिख दिया। इस उदाहरण को लेते हुए हमने बातचीत की कि इस समय रेखा को पढ़ने से हम पूजा के जीवन की कुछ खास घटनाओं के बारे में जान सकते हैं (देखें चित्र 2)। इसके बाद सभी विद्यार्थियों को उनकी कॉपियों में उनके जीवन की समय रेखा बनाने के लिए कहा। इस काम के लिए विद्यार्थियों को 20 मिनट का समय दिया। उन्होंने स्केल से रेखा बनाई, और हर एक सेंटीमीटर को एक साल मानकर एक समय रेखा तैयार की। दिए गए समय में लगभग उन सभी विद्यार्थियों ने, जिन्हें लिखना आता था, अपने जीवन की समय रेखाएँ बना ली थीं। कुछ ने साल के साथ ही तारीख और महीने भी लिख दिए थे। कॉपी में बनाई गई समय रेखा पर जगह कम होने की वजह से उन्होंने सालों को संक्षेप में दर्शाया था। मसलन, सामान्य संवत् (ईसवी) 2012 न लिखकर सिर्फ 12 लिख दिया था।

आगे चर्चा हुई कि आपके जन्म से पहले भी आपके परिवार और समुदाय में कई घटनाएँ घटी हैं। इसी तरह साल 2025 के आगे आने वाले सालों में भी आपके परिवार और समुदाय में कई

महत्वपूर्ण घटनाएँ घटेंगी। अतीत और भविष्य में घटी इन सभी घटनाओं को दर्ज करने के लिए समय रेखा को दोनों दिशाओं में आगे बढ़ाया जा सकता है। सभी विद्यार्थियों को उनके परिवार और समुदाय के सदस्यों से चर्चा करके उनकी समय रेखाओं को आगे बढ़ाने के लिए कहा गया। कक्षा 8 के विद्यार्थी अगले दिन इस गृहकार्य को करके लाए भी।

गाँव की समय रेखा

दूसरी गतिविधि कक्षा 8 के विद्यार्थियों के साथ की गई। कक्षा में चर्चा हुई कि गाँव में कब, कौन-सी महत्वपूर्ण घटना घटी, इसको भी समय रेखा पर दर्ज किया जा सकता है। विद्यार्थियों को गाँव की समय रेखा तैयार करने के लिए कहा गया। इसके लिए उन्हें गाँव के लोगों से बातचीत करनी थी। बातचीत के लिए कुछ प्रश्न भी हमने बनाए। ये प्रश्न इस प्रकार थे :

1. गाँव का पहला कुआँ किस साल खोदा गया?
2. गाँव में पहला बिजली कनेक्शन किस साल लगा?
3. गाँव में पहला ट्रैक्टर किस साल आया?
4. गाँव में पहली पक्की सड़क किस साल बनी?
5. गाँव में पहला विद्यालय किस साल शुरू हुआ?
6. गाँव में पहला आँगनवाड़ी केन्द्र किस साल शुरू हुआ?
7. गाँव की पहली महिला सरपंच किस साल और कौन बनीं?
8. गाँव का पहला सामुदायिक भवन किस साल बना?
9. गाँव का पहला बोरवेल किस साल खुदा?

विद्यार्थियों ने समुदाय के वयस्कों और बुजुर्गों से इन प्रश्नों पर चर्चा की। सभी प्रश्नों पर बातचीत करने और अपेक्षित जानकारी इकट्ठी करने में उन्हें तीन दिन का समय लगा। विद्यार्थियों ने बताया कि बुजुर्गों को इन घटनाओं के सटीक साल याद नहीं हैं। कुछ लोग अनुमान लगाकर साल बता रहे थे। कुछ प्रश्नों के उत्तरों में अलग-अलग लोग अलग-अलग साल बता रहे थे। वे अपने या समुदाय के जीवन की घटनाओं के पहले या बाद के आधार पर उनका अनुमान लगाकर बताते थे। जैसे-मैं जब 10वीं में था तब वे सरपंच बने थे। इसके लिए अन्य लोगों से भी इसकी पुष्टि की गई। लेकिन लिखित दस्तावेज़ न होने की वजह से ये सभी उत्तर अनुमानित ही थे।

विद्यार्थियों द्वारा पता किए गए सभी प्रश्नों के उत्तरों को अलग-अलग पर्चियों पर लिख लिया गया। इसके बाद विद्यार्थियों ने ड्राइंग शीट पर ईसवी सन् 1900 से ईसवी सन् 2050 तक की वार्षिक समय रेखा बनाई। एक ही ड्राइंग शीट पर इसे पूरा बनाने के लिए समय रेखा को सर्पिलाकार बनाया गया। समय रेखा का इस्तेमाल बार-बार किया जा सके, इसके लिए उपरोक्त प्रश्नों के उत्तरों को इस पर न लिखकर अलग से पर्चियों पर लिखा गया। उत्तरों की पर्चियों को पहले क्रम से जमाया। इसे देखकर विद्यार्थी

समझ पा रहे थे कि गाँव में कौन-सा बदलाव पहले आया और कौन-सा बाद में। जैसे-गाँव का पहला कुआँ खुदने के 83 साल बाद गाँव में पहला बिजली कनेक्शन आया। विद्यार्थियों से चर्चा में लोगों ने बताया कि गाँव में बिजली कनेक्शन आने के बाद पाँच सालों में ही आर्थिक रूप से सक्षम कई ग्रामीणों ने बोरवेल करवाए, और मोटर लगाकर बिजली की मदद से सिंचाई करने लगे। विद्यार्थी अब बिना क्रम के किसी भी पर्ची को पढ़कर उसे समय रेखा पर सही साल के साथ मिलाकर लगाने लगे थे।

पाठ्यपुस्तकें और समय रेखा

कुछ इसी तरह का काम कक्षा 7 के साथ किया गया। इस कक्षा में हमने एनसीईआरटी की पुरानी पाठ्यपुस्तक (हमारे अतीत भाग 2 व 3) के अनुसार भारतीय मध्यकाल की समय रेखा पर काम किया। मध्यकाल का दायरा 1000 साल का होने की वजह से हमने 10-10 सालों के अन्तर वाली दशकीय समय रेखा तैयार की। विद्यार्थियों को स्केल की मदद से एक-एक इंच के अन्तर पर ड्राइंग शीट की पट्टियों पर पेंसिल से निशान लगाकर इनमें स्केच पेन से साल लिखने का तरीका बताया। (चित्र 3) फिर विद्यार्थियों और शिक्षक ने मिलकर इसको ईसवी सन् 750 से ईसवी सन् 1750 तक बनाया। बातचीत हुई कि यह समय रेखा ईसा के जन्म के 750 साल बाद से लेकर 1750 साल बाद तक की है। माने इसमें दर्शाए गए सभी वर्ष ईसवी, यानी सामान्य संवत् ही हैं। समय रेखा बनकर तैयार होने के बाद विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यपुस्तकों में तिथियों के साथ दिए गए महत्वपूर्ण तथ्यों, जैसे-किसी राजा का शासनकाल, युद्ध का साल, किसी ऐतिहासिक इमारत के निर्माण का काल, आदि की पर्चियाँ तैयार करके दिखाई। उदाहरण के लिए-

1. पृथ्वीराज चौहान का शासनकाल ईसवी सन् 1175 से ईसवी सन् 1192 तक रहा।
2. पानीपत का पहला युद्ध सामान्य संवत् 1526 में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच हुआ।
3. आगरा के ताजमहल का निर्माण 1643 ईसवी सन् में पूरा हुआ।

गृहकार्य में विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के अलग-अलग अध्यायों को पढ़ने और पर्चियाँ बनाकर लाने के लिए निर्देश दिए गए।

अगले दिन जब विद्यार्थी पर्चियाँ बनाकर लाए तो शिक्षक ने पर्चियों के बण्डल में से कुछ पर्चियों को बिना क्रम के निकालकर, पढ़कर और उनमें दिए गए सालों के अनुसार उन्हें समय रेखा पर जमाकर दिखाया। इसके बाद प्रत्येक विद्यार्थी को बारी-बारी से बण्डल में से एक पर्ची को बिना क्रम के निकालने, पढ़ने और समय रेखा पर जमाने के लिए कहा गया। शुरुआत में दशकीय समय रेखा पर उन्हें सही जगह खोजने में कुछ दिक्कतें आ रही थीं। जैसे-1536 को 1530 वाले हिस्से में रखा जाए या 1540 वाले हिस्से में। उन्हें बताया गया कि 1536 का साल 1530 के बाद आता है इसलिए इसे 1530 वाले खाने में रखना है तो वे इसे समझने लगे और समझकर रखने लगे।

ईसा पूर्व और ईसवी

इन सभी गतिविधियों के दौरान ईसा पूर्व और ईसवी की अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए भी विद्यार्थियों से बातचीत होती रही। यह बातचीत थी कि आज से 2025 साल पहले एक व्यक्ति हुए थे, जिनको ईसा नाम से जाना जाता है। विद्यार्थियों को ईसा का एक रेखाचित्र दिखाकर बताया गया कि इनके जन्म से आज तक दुनिया भर में सालों को गिना जा रहा है। उनके जन्म के साल को पहला साल मानकर जो साल गिने जा रहे हैं उन्हें ईसवी या सामान्य संवत् कहा जाता है। उनके जन्म के पहले भी हमारी पृथ्वी पर कई घटनाएँ घटी हैं। उन घटनाओं के समय को बताने के लिए उनके समय या सालों को ईसा पूर्व कहा जाता है। ईसा पूर्व के सालों को ही सामान्य संवत् पूर्व भी कहा जाता है। इतिहास पढ़ते समय यह समझना ज़रूरी होता है कि जिस घटना के बारे में बात की जा रही है वह ईसा के जन्म के पहले के समय की है या ईसा के जन्म के बाद के समय की। कक्षा 8 के विद्यार्थी इस बात को अच्छी तरह समझ गए थे। वे बता पा रहे थे कि अभी ईसवी 2025 चल रहा है। भीमबेटका गुफाओं के चित्र, हड़प्पा सभ्यता, जनपद काल, मौर्य साम्राज्य, आदि ईसा के जन्म के पहले के सालों में थे। इसी तरह, खजुराहो के प्राचीन मन्दिर, ताजमहल, राष्ट्रपति भवन, आदि ईसा के जन्म के बाद में बने हैं। समय रेखा पर उपरोक्त

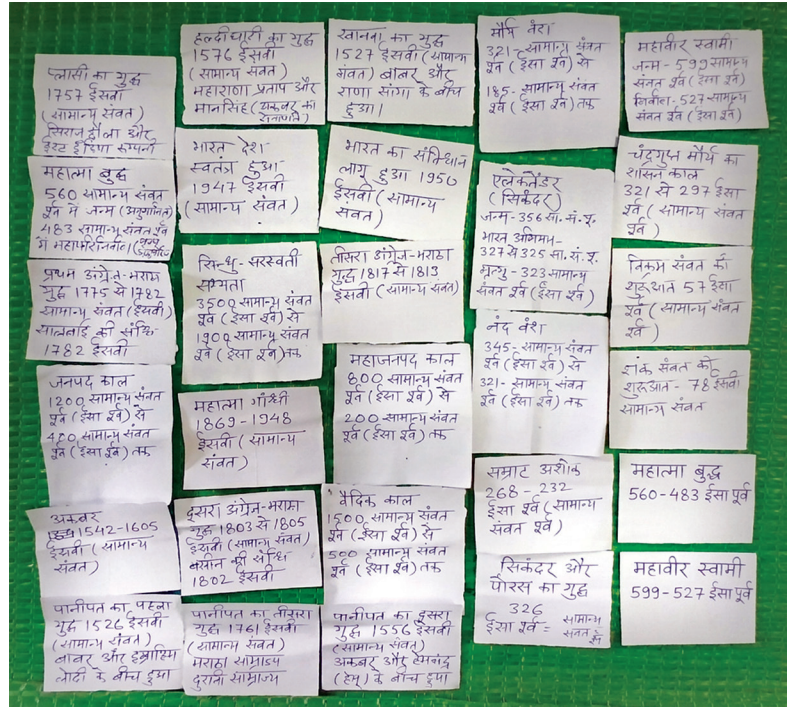


चित्र 3 : महत्वपूर्ण घटनाओं के अंकन के लिए विद्यार्थियों ने बनाई दशकीय समय रेखा

“

विद्यार्थी अपने जीवन की वार्षिक समय रेखा और अपने गाँव की वार्षिक समय रेखा को आसानी से समझ पाते हैं, बना पाते हैं, और समझकर पढ़ पाते हैं। इनकी तुलना में पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु पर आधारित परिचियों को पढ़कर समझने और उन्हें समय रेखा पर दर्शाने में उन्हें ज़्यादा अभ्यास की ज़रूरत पड़ती है।

”



चित्र 4: समय रेखा के ज़रिए अतीत की महत्वपूर्ण घटनाओं का अंकन

गतिविधियों को करने पर हमने यह पाया कि विद्यार्थी अब समय रेखा समझकर पढ़ पाते हैं, और इसे खुद बना भी पाते हैं। वे अब ईसा पूर्व और ईसवी को समझ के साथ बता पाते हैं।

मैंने और शिक्षक ने जो सीखा-समझा

1. समय रेखा पर साल को पूरा (2025) न लिखकर संक्षेप में सिर्फ 25 लिखा जाए तो विद्यार्थियों को शुरुआत में समझने में दिक्कत होती है। इसलिए शुरुआत में साल को पूरा, यानी 2025 लिखना चाहिए।
2. विद्यार्थी अपने जीवन की वार्षिक समय रेखा और अपने गाँव की वार्षिक समय रेखा को आसानी से समझ पाते हैं, बना पाते हैं, और समझकर पढ़ पाते हैं। इनकी तुलना में पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु पर आधारित परिचियों को पढ़कर

समझने और उन्हें समय रेखा पर दर्शाने में उन्हें ज़्यादा अभ्यास की ज़रूरत पड़ती है।

3. जैसा कि शुरुआत में जिक्र किया है, समय रेखा पर काम की शुरुआत कक्षा 6, 7 और 8 के साथ हुई। लेकिन इन तीनों कक्षाओं के साथ काम करते हुए अनुभव हुआ कि कक्षा आठवीं और सातवीं के विद्यार्थियों को कक्षा छठवीं के विद्यार्थियों के मुकाबले समय रेखा की अवधारणा जल्दी समझ आने लगती है। हमें लगता है कि इसके कारण उनका मानसिक विकास, अनुभव, विषयवस्तु की समझ और मौके हैं।
4. समय रेखा पर काम करने से पाठ्यपुस्तक के कई पाठों की विषयवस्तु में अन्तर्सम्बन्धों को समझने में भी मदद मिलती है।



हिमांशु खोले वर्ष 2014 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन मध्य प्रदेश में कार्यरत हैं। वे सागर के खुरई ब्लॉक में आँगनवाड़ी वर्कर्स, शासकीय शिक्षकों और युवाओं के साथ काम करते हैं।

सम्पर्क : himanshu.khole@azimpremjifoundation.org